www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

बहुत से लोग हिंदू धर्म की जाति व्यवस्था पर आपत्ति करते हैं और उस आधार पर भेदभाव के लिए धर्म को दोषी मानते हैं।

प्रारंभिक काल में जाति संरचना की उपयोगिता थी जो अब विभिन्न क्षेत्रों और भूमिकाओं के बढ़ने के कारण कम हो रही है। यह जाती संरचना तेजी से ढह रही है। महत्वपूर्ण बात यह है कि इस प्रकार का समाज हिंदू धर्मग्रंथों में वर्णित है और इसलिए जातिरहित समाज व्यवस्था का स्वीकार किया जाता है।

हिंदू धर्म में जोर भौतिकवादी लाभ पर नहीं बल्कि आध्यात्मिक लाभ पर था।भौतिकवादी लाभ तो केवल एक जन्मकाल (100 साल) तक साथ देता है। और फिर अरबों साल तक कष्ट तथा यातनाएँ सहन करनी पडती है। जबकि आध्यात्मिक लाभ इन सब कष्ट तथा यातनाओं से हमेशा के लिये छुट्टी दिलाकर दिव्यानंद का अनुभव करवा सकता है।

वेद व्यास जिनके द्वारा माना जाता है कि वेदों का संकलन किया गया है, कहते है, "शूद्र आध्यात्मिक दृष्टि से बेहतर स्थिति में है क्योंकि ब्राह्मण अत्यधिक कठोर अनुष्ठानों के माध्यम से जो हासिल करते हैं, शूद्र अपनी आसान दैनिक दिनचर्या से ही हासिल करते है ।"

यदि आप भारत के संतों या भक्तों की जाँच करते हैं तो उसमें ब्राह्मण कम हैं। और भगवान कृष्ण गीता में कहते हैं, 'मेरा भक्त, चाहे सबसे निचली जातियों में से क्यों न हो, वह किसी भी प्रकार के किसी भी उच्च जाति के ब्राह्मण से बहुत बड़ा है और ऐसा भक्त मुझे बहुत प्रिय है।'

भगवान कृष्ण ने वृंदावन की गोपियों को आध्यात्मिक क्षेत्र में सर्वोच्च पद पर रखा। और ये गोपियाँ सभी तथाकथित नीचली जाति से थी।

इस प्रकार हिंदू धर्म को दोष देने का कोई मतलब नहीं है कि यह जाति व्यवस्था पर आधारित है क्योंकि जाति व्यवस्था अब ढह रही है और हिंदू धर्म में ऐसा समाज स्वीकार्य है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132